Self Respect

17-09-2014

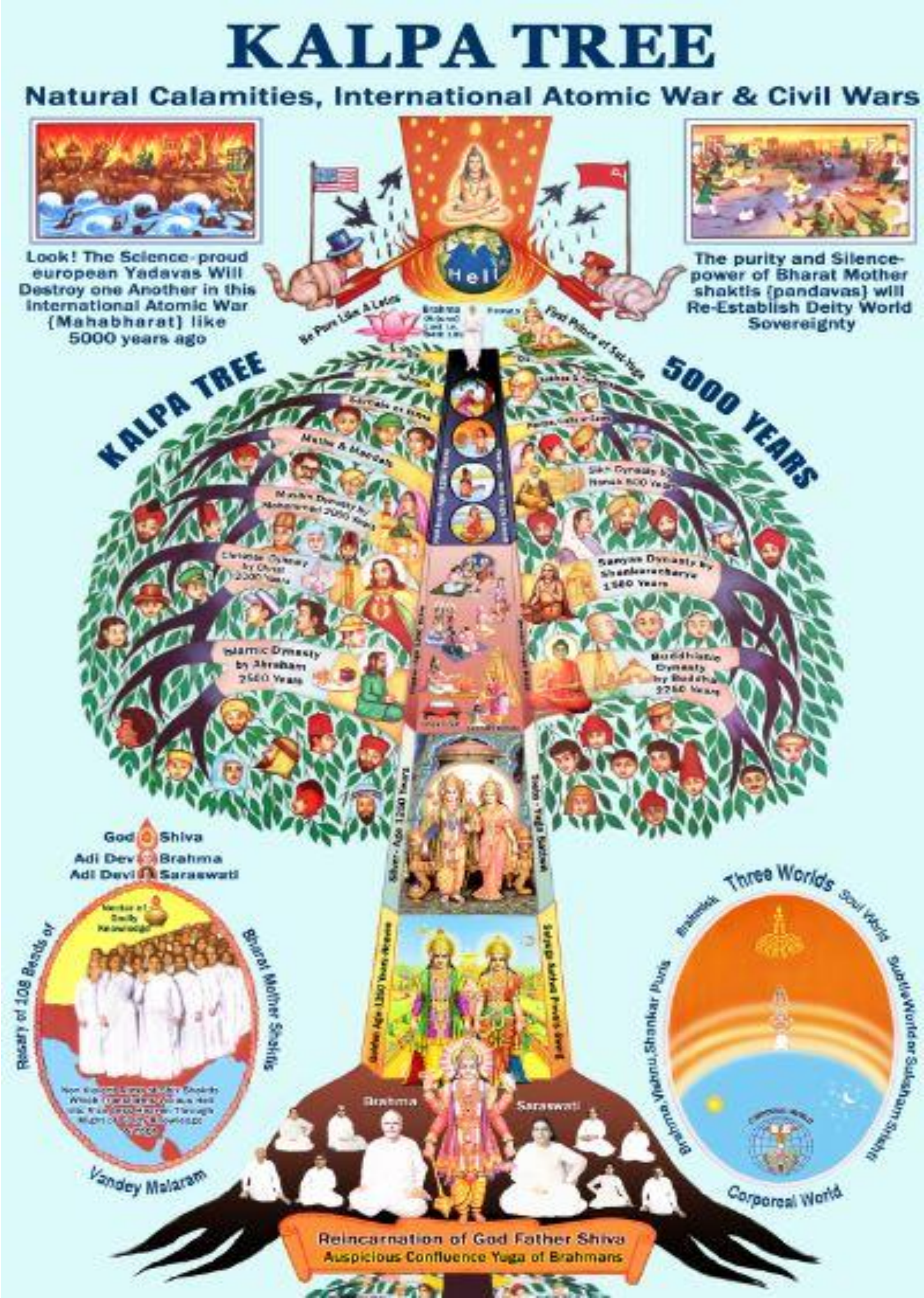

- अब तुम बच्चे भी देवता बनते हो तो वहाँ हर चीज सतोप्रधान होती है । यहाँ भी बड़े आदमी के घर में जायेंगे तो बड़ी सफाई आदि रहती है । तुम तो सबसे जास्ती बड़े देवता बनते हो । बड़े आदमी भी नहीं कहेंगे । तुम बहुत ऊंच देवतायें बनते हो, यह कोई नई बात नहीं है । 5 हजार वर्ष पहले भी तुम यह बने थे नम्बरवार ।

- बच्चों को बड़ी खुशी होती है-हम बहुत ऊंच देवता बनते हैं । एक ही बाप हमको पढ़ाने वाला है जो हमको बहुत ऊँच बनाते हैं ।

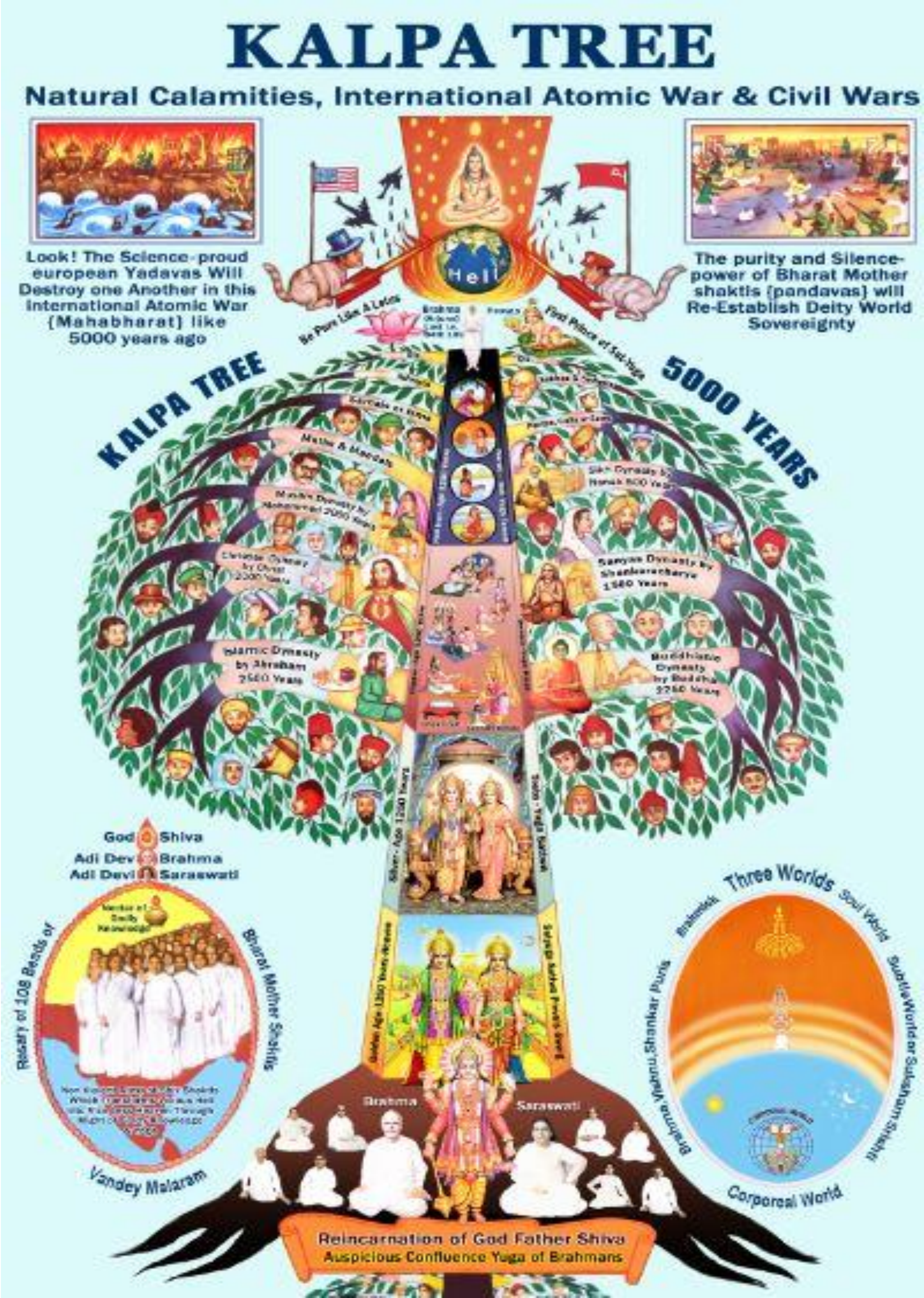

- बाप समझाते हैं-इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही तुम यह सब बातें सुनते हो । कल नहीं सुनते थे । कल मृत्युलोक के मालिक थे, आज अमरलोक के मालिक बनते हो । निश्चय हो जाता है कल मृत्युलोक में थे, अभी संगमयुग पर आने से अमरलोक में जाने के लिए तुम पुरूषार्थ कर रहे हो । पढ़ाने वाला भी अब मिला है ।

- इस पढ़ाई से तुम बहुत ऊंच पद पाते हो । अभी तुम रोशनी में हो । यह भी सिवाए तुम बच्चों के और कोई को मालूम नहीं है ।

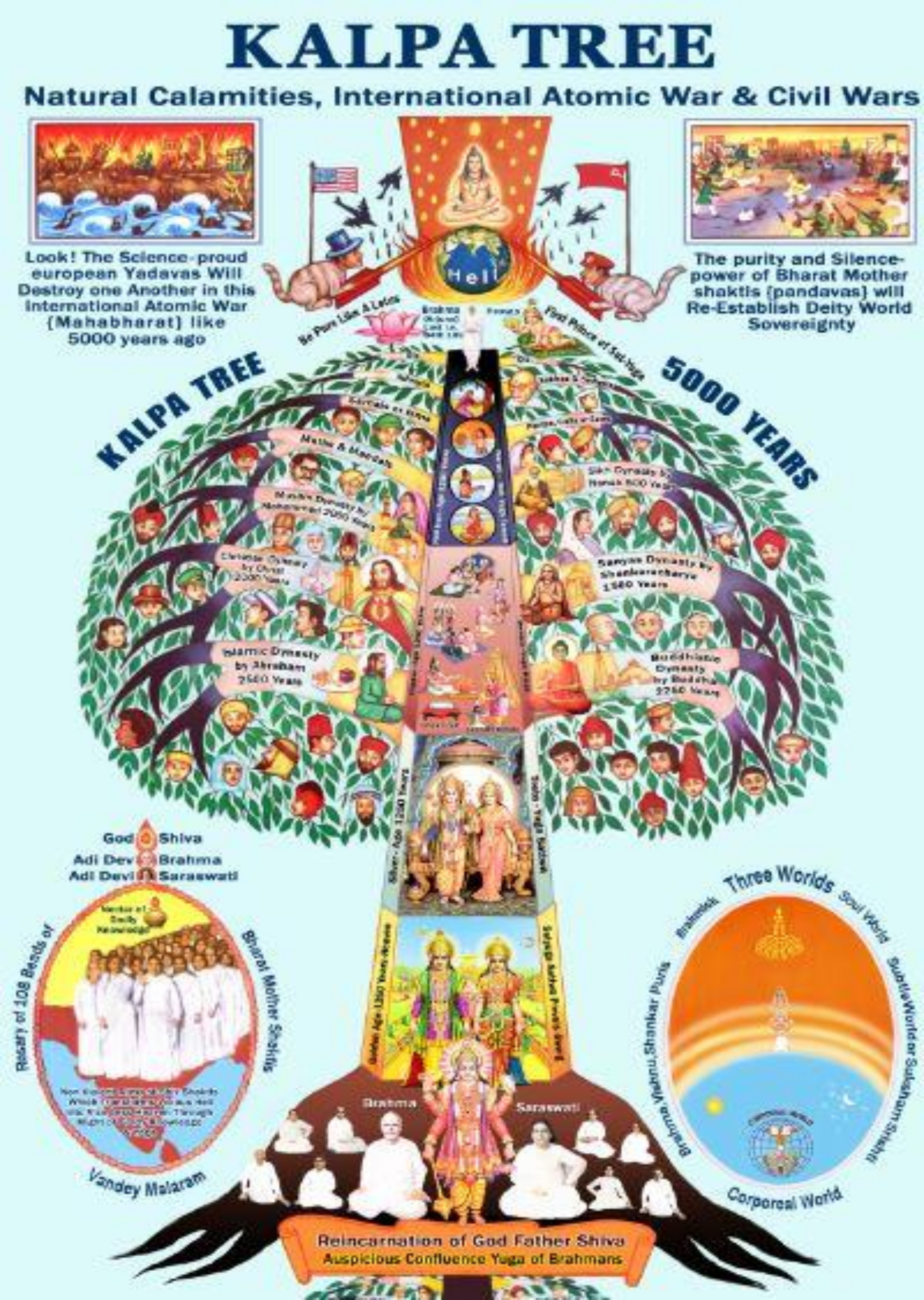

- अभी तुम संगमयुगी ब्राह्मणों को मालूम है कि हम कलियुग में नहीं हैं । यह सदैव याद रखना है हम नये विश्व के मालिक बन रहे हैं । बाप हमको पढ़ाते ही हैं नई दुनिया में जाने के लिए । यह है शुद्ध अहंकार । वह है अशुद्ध अहंकार । तुम बच्चों को तो कभी अशुद्ध ख्यालात भी नहीं आने चाहिए ।
- यह भी ईश्वरीय मिशनरी है । ईश्वर बैठ धर्म की स्थापना करते हैं । यह बात किसको भी पता नहीं है । बाप को बुलाते भी हैं परन्तु जैसे तवाई, समझते ही नहीं । कहते हैं यह कैसे हो सकता है ।

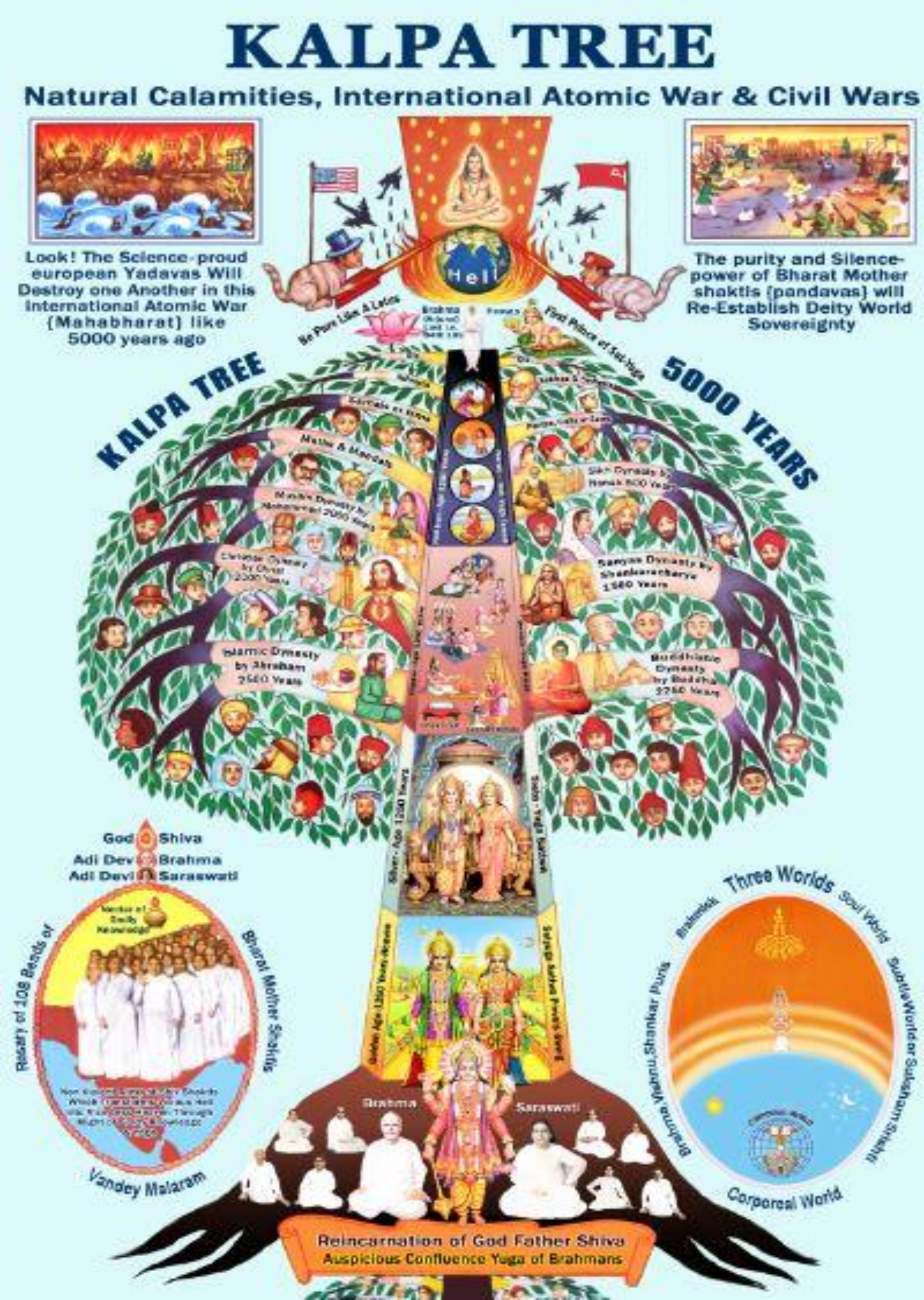

- मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

- वरदान: अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को चिंतन करके परिवर्तन करने वाले स्वचिंतक भव !